SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

संस्कृति और सभ्यता में अर्न्तसम्बन्ध

चन्द्रशेखर सिंह राजपूत, Ph.D., हिन्दी विभाग
शासकीय नवीन महाविद्यालय कुई–कुकदुर, तह.–पण्डरिया, जिला–कबीरधाम, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
चन्द्रशेखर सिंह राजपूत, Ph.D.
E-mail : csrajput105@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/07/2024
Revised on : 16/09/2024
Accepted on : 25/09/2024
Overall Similarity : 01% on 17/09/2024

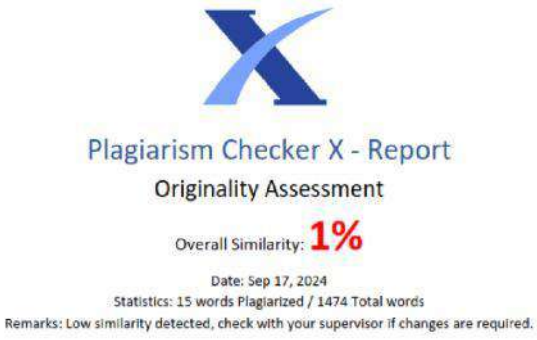

शोध सार

सभ्यता और संस्कृति दोनों आपस में पूरक है। संस्कृति मनुष्य का सीखा हुआ व्यवहार है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती है तथा मानवो का रीति रिवाज परम्परा तथा वस्त्र पहनने आदि का ढंग है। संस्कृति से मानवों में सभ्यता और नैतिकता का विकास होता है। संस्कृति एक समाज के जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे: कि उनके विश्वास, परंपराएँ, कला, भाषा, और रीति–रिवाजों का है। यह समाज के लोगों के सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीके को दर्शाती है। सभ्यता एक अधिक व्यापक और संगठित सामाजिक प्रणाली को संदर्भित करती है, जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक संरचनाएँ शामिल होती हैं। सभ्यता का निर्माण उस समाज की सांस्कृतिक परंपराओं, तकनीकी उन्नति और प्रशासनिक तंत्र से होता है। संक्षेप में, संस्कृति सभ्यता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है, जो सभ्यता के सामाजिक और ऐतिहासिक विकास को आकार देती है। व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसका आचार–विचार का निर्माण उसी के अनुरूप बनता है।

मुख्य शब्द

संस्कृति, सभ्यता, विकास, समाज.

परिचय

सभ्यता और संस्कृति दोनों मनुष्य की सृजनात्मक क्रिया के कार्य का परिणाम है। सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर दोनों भिन्न हैं, किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से एक–दूसरे के पूरक हैं। बिना संस्कृति के कोई समाज या समुदाय अपनी सभ्यता पर गर्व नहीं कर सकता। संस्कृति में सभ्यता का अर्न्तभाव हो जाता है, पर सभ्यता में संस्कृति का नहीं। संस्कार रूपमें अवशिष्ट सभ्यता संस्कृति बन जाती है क्योंकि एक आभ्यन्तर पक्ष है तो दूसरी बाह्य पक्ष की अभिव्यक्ति अर्थात् एक शरीर तो दूसरी आत्मा,एक

साधन है तो दूसरी साध्य। संस्कृति हमें राह बताती है तो सभ्यता उस राह पर चलती है।

शोध पत्र की उपयोगिता

1. प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से आम जन मानस में संस्कृति के प्रति लगाव व प्रेम उत्पंन्न होगा।
2. आम जनमानस अपने सभ्यता को जानने जाने में रूची लेंगें।
3. शासन– प्रशासन सांस्कृतिक उपयोगिता को समझकर राज्य एवं केन्द्र में सांस्कृतिक विभाग की स्थपना करेंगें और जहाँ पहले से है उनको सशक्त बनाने का कार्य करेंगें।

संस्कृति शब्द 'सम्' उपसर्ग के साथ संस्कृत की 'कृ' धातु के पश्चात् 'क्तिन्' प्रत्यय के प्रयोग से बनता है, जिसका अभिप्राय है स्वच्छ या परिष्कृत करना। इस प्रकार संस्कृति का शब्दगत अर्थ हुआ 'संस्कार करने अर्थात् किसी वस्तु को संस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् संस्कृति है। यह संस्कृति जिन शाश्वत मूल्यों पर बल देती है उनके कारण ही यह महान् है, भारतीय मनीषा जीवन की परिपूर्णता लौकिक एवं आध्यात्मिक पक्ष के समूचित समन्वय में ढूँढती रही है। लौकिक पक्ष का लक्ष्य है अभ्युदय और आध्यत्मिक पक्ष का निःश्रेयस।[1] जहॉ इन दोनों पक्षों की सिद्धि होती है उस तत्व को धर्म कहते हैं इस प्रकार संस्कृति और धर्म दोनों शब्द भारतीय संस्कृति के प्रसंग में प्रायःएकार्थक प्रतीत होते हैं। भारतीय संस्कृति का निर्माण सहत्रों वर्षो में हुआ है। संस्कृति की अजस्त्रधारा अनंतकाल से प्रवाहित हो रही है। भारतीय संस्कृति अपने मूलभूत उत्तम आदर्शो के कारण ही आजतक विश्व में विशिष्ट बनी रही है।[2] वैदिक आदर्श तो अनुशासन, एकता तथा समन्वय का रहा है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। ऋ 10/191/2

संस्कृति किसी जाति या समाज की अन्तरात्मा है। इसके द्वारा देश के समस्त संस्कारों का अभिज्ञान होता है जिसका अवलम्ब पाकर मनुष्य अपने सामाजिक या सामूहिक आदर्शों का निर्माण करता है।[3] संस्कृति हमारे जीवन–क्रमों, चिंतन पद्धतियों, दैनिक सम्पर्कों, कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन, विनोद आदि में हमारी प्रकृति की ही अभिव्यक्ति है। दूसरे शब्दों में कहें तो संस्कृति का सम्बन्ध रहन–सहन के ढ़ंग, भावनाऍ, आचार–विचार तथा उनसभी भौतिक पदार्थों से है जो किसी समूह द्वारा अर्जित हो या प्रदान किया गया हो और जिनका प्रयोग वह समूह करता हो।

प्रकृति और प्रत्यय के आधार पर संस्कृति और संस्कार का एक ही अर्थ है, संस्कृति संस्कार के पुंज का नामांतरण है। वस्तुतः किसी भी समाज की रचना उसके आंतरिक आचार संगठन पर निर्भर रहती है जिसे संस्कृति कहते हैं। संस्कृति समाज का प्राणतत्व ही नहीं उसकी पथप्रदर्शिका भी है जो समाज और व्यक्ति को समुन्नत करने के साथ ही उसे दोषमुक्त करती है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल संस्कृति की परिभाषा देते हुए लिखते हैं कि संस्कृति का अर्थ है कि –संस्कार सम्पन्न जीवन।

हिन्दू संस्कृति की विशेषता उसकी समन्वयात्मकता, व्यापकता और उदारता में है, आत्मा दर्शन को हिन्दू संस्कृति का निचोड़ कहा जा सकता है।

सभ्यता की उत्पत्ति

''सभाया साधुः'' अर्थ से सभा शब्द में यत् प्रत्यय लगाकर हुई है। सभा में यत् प्रत्यय लगाकर सभ्य शब्द बनता है और सभ्य में तत् प्रत्यय करने से सभ्यता शब्द बनता है।[4] प्राचीनकाल में जो राजा की सभा में बैठते थे या बैठने की योग्यता रखते थे उन्हें सभ्य शब्द से सम्बोधित किया गया और इसके लिए उनका जो सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक योग्यता हुआ करता था वह सभी सभ्यता का परिचायक होता था।

चित्तवृत्तियों के उदात्त एवं परिष्कृत होते ही मानव पशुत्व से ऊँचा उठ गया, सुसंस्कृत बन गया। ये सुसंस्कृत महामानव ऋषि, मुनि, दार्शनिक, कवि एवं कलाकार कहलाये। इन सुसंस्कृत महामानवों ने जीवन विकास के लिए

नाना तत्वों का अन्वेषण किया। जीवन आदर्शों को ढूंढ निकाला, ऐसी सामाजिक भावनाओं को विकसित किया जिससे मानव स्वार्थों से ऊपर उठ कर ''जीओ और जीने दो'' के सिद्धांत को समझने लगा और इस प्रकार उसने सामाजिक रहन–सहन, खानपान को पवित्र एवं सुंदर बनाया। सर्वहितकारिणी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण किया, समाज को सुशासित करने के लिए राजनैतिक नियमों का आविर्भाव किया और अपने विकासक्रम की लम्बी परम्परा में भौतिक समृद्धि के रूप में गृह, कृषि, उद्योग, रेल, तार, रेडियो, आदि का आविष्कार किया।[5] इस प्रकार मानव की उदात्तचित्तवृत्ति की जो सामाजिक और आर्थिक संघटन के रूप में बहुमुखी अभिव्यक्ति हुई, उसे ही सभ्यता कहा जाता है दूसरे शब्दों में कहें तो सभ्यता का सम्बन्ध उपयोगी वस्तुओं के निर्माण तथा उपयोग से होता है अर्थात् सभ्यता का आशय उस समूची यंत्र पद्धति और संगठन से है जिसका मनुष्य ने अपने जीवन की परिस्थितियों पर नियंत्रण करने के प्रयास में आविष्कार किया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सभ्यता एक विशिष्ट प्रविधि है जिसके द्वारा मानव समाज अपने प्राकृतिक अथवा भौतिक पर्यावरण पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करता है। कुछ विद्धानों का विचार है कि वास्तव में सभ्यता और संस्कृति में कोई मौलिकअन्तर नहीं है। सभ्यता संस्कृति का ही विकसित रूप है, किसी भी समाज में प्रारंभ मेंसंस्कृति विकसित होती है तथा कुछ काल उपरांत समाज की जटिलता एवं विस्तार के फलस्वरूप सभ्यता का विकास होता है।

संस्कृति और सभ्यता में अन्तर

हम देखते हैं कि सामान्य रूप में संस्कृति और सभ्यता इन दोनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है किन्तु यह उचित नहीं है। इनमें निम्न अन्तर भी देखा जाता हैः

1. संस्कृति संस्कार से बनती है और सभ्यता नागरिकता का रूप है। सभ्यता का सम्बन्ध भौतिक वस्तुओं से है और भौतिक वस्तुओं का मूल्याँकन उपयोगिता के आधार पर संभव है। दूसरी ओर संस्कृति का सम्बन्ध अभौतिक आदर्शों, मूल्यों एवं विचारों आदि से होता है, जिन्हें किसी स्थूल एवं संख्यात्मक मानदण्ड द्वारा नहीं मापा जा सकता अर्थात् सभ्यता को मापा जा सकता है संस्कृति को नहीं।
2. सभ्यता का संचार सरल है, संस्कृति का कठिन क्योंकि सभ्यता भौतिक वस्तुओं से प्रकट होने के कारण शीघ्र ही सर्वग्राही हो जाती है। इससे भिन्न संस्कृति का सम्बन्ध आंतरिक एवं आत्मिक प्रवृत्तियों से होता है जो कठिनाई से ग्राह्य होता है।
3. सभ्यता का हस्तांतरण बिना किसी परिवर्तन अथवा समायोजन के ही हो सकता है इसके विपरित संस्कृति का सम्बन्ध विचारों एवं सूक्ष्म आदर्शों से होता है।
4. संस्कृति का सम्बन्ध आंतरिक एवं आत्मिक प्रवृत्तियों से होता है इसके विपरित सभ्यता का सम्बन्ध बाहरी आवश्यकताओं से होता है।
5. सभ्यता को बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती, प्रत्युत संस्कृति केवल समान विचार वालों को ही हस्तांतरित की जा सकती है।
6. श्री प्रभुदयाल मितल के शब्दों में ''सभ्यता केवल भौतिक और शारीरिक उन्नयन है जबकि संस्कृति मानसिक और बौद्धिक विकास है। सभ्यता और संस्कृति का सम्बन्ध दूध में व्याप्त मक्खन, फूलों में सुगंध और शरीर में आत्मा के समान है। इस प्रकार सभ्यता के बाहरी ढ़ांचा मात्र है जो संस्कृति के बिना निःसार और निष्प्राण है। सभ्यता जल्दी बनती है और जल्दी बिगड़ती भी है, किन्तु संस्कृति के बनने में भी पर्याप्त समय लगता है और बिगड़ने में भी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सभ्यता एवं संस्कृति एकदूसरे के पूरक हैं, अभिन्न अंग हैं।

निष्कर्ष

संस्कृति और सभ्यता दोनो एक दूसरे के पूरक है। संस्कृति मानव समाज के लिए पथप्रदर्शक का कार्य करती है तथा संस्कृति प्रथा, परम्परा लोक रीति रिवाजों का वाहक है तथा सभ्यता की जननी है। सभ्यता से ही समाज में नैतिकता जैसे गुणों का विकास होता है। सभ्यता का जन्म एक दिन में नही हो जाती है यह एक उद्विकासीय

प्रक्रिया का परिणाम है जो आज हम सभ्य समाज में रह रहे है। सभ्यता एवं संस्कृति में प्रचीनता का गुण समाहित होता है। सभ्यता और संस्कृति सामाजिक नियंत्रण का कार्य करती है और समाज में सामाजिक विधि व्यवस्था बनाने में सहयोगात्मक भूमिका निभती है।

संदर्भ सूची

1. खण्डेलवाल, जयकिशन प्रसाद (1970) *प्राचीन भारतीय संस्कृति कला और साहित्य,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, पृ. 10।
2. खण्डेलवाल, जयकिशन प्रसाद (1970) *प्राचीन भारतीय संस्कृति कला और साहित्य,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, पृ. 10।
3. गुप्त, तनसुखराम (2018) *निबंध सौरभ,* सूर्य भारतीय प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली पृ. 782।
4. खण्डेलवाल, जयकिशन प्रसाद (1970) *प्राचीन भारतीय संस्कृति कला और साहित्य,* विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, प्रथम संस्करण, पृ. 4।
5. गुप्त, तनसुखराम (2018) *निबंध सौरभ,* सूर्य भारतीय प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृ. 781।
6. खण्डेलवाल, जयकिशन प्रसाद (1970) *प्राचीन भारतीय संस्कृति कला और साहित्य,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, पृ. 5।

****